UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 118-121

"श्रीमद् भगवद् गीता के जीवन मूल्यों का वर्तमान शिक्षा प्रणाली में योगदान"

डॉ. विजयलक्ष्मी पोद्दार
सहायक प्राध्यापक
एम.के.एच.एस. गुजराती कन्या महाविद्यालय

डॉ. सुषमा शाही
सहायक प्राध्यापक
एम.के.एच.एस. गुजराती कन्या महाविद्यालय

सारांश :–

''दुर्लभं मानुषं देहं, देहिनां क्षणभंगुराः'' दुर्लभ इसलिए कहा गया है कि इस देह में बुध्दि, विचार, कल्पना, भावना, पुरूषार्थ सब क्षणभंगुर है । चिरकाल तक साथ रहने वाले इन तत्वों को मनुष्य को अपने परिश्रम से अर्जित करना पड़ता है । जीवन की इस अल्पावधि में सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव है युवावस्था, जहाँ मनुष्य अपने जीवन मूल्यों, गौरवशाली परंपराओं, संस्कारों और सांस्कृतिक आयामों को अपने व्यक्तित्व में लाकर समाज, देश व राष्ट्र का नाम उज्जवल करता है । अपने पुरूषार्थ, लगन और भाव–विहलता से समाज को नई दृष्टि प्रदान करता है । नए प्रतिमानों को गढ़कर कीर्ति प्राप्त करता है । इसलिए जीवन मूल्य और शिक्षा का अंतरसंबंध है। बदलते परिवेश व परिस्थितियों में समाज ने वैश्विक स्तर पर नए प्रतिमान खड़े किये है, जिन्हें युवा पीढ़ी को बड़ी आत्मीयता से सहेजना होगा । अपनी संस्कृति, सभ्यता और जीवन मूल्यों को सहेजना उनकी प्राथमिक जिम्मेदारी बनती है । वर्तमान शिक्षा प्रणाली के तहत दी जाने वाली शिक्षा एक जिम्मेदार नागरिक तैयार करती है, जिसके कंधों पर समाज और देश की जिम्मेदारी होती है। विद्यार्थियों को धार्मिक, दार्शनिक तत्वों के आधार पर रामायण, महाभारत जैसे ग्रंथों के पात्रों के माध्यम से दी जानी वाली मानवीय मूल्यों व उनके द्वारा दिये जाने वाले प्रबंधन सिध्दांतों को समर्पण, नैतिकता, उच्च भावना, नेतृत्व क्षमता व सामाजिक कल्याण जैसी भावनाओं को डाला जा सकता है ।

भारतीय परंपरा में मनुष्य जीवन को दुर्लभ माना गया है। ''दुर्लभं मानुषं देहं, देहिनां, क्षणभंगुराः'' दुर्लभ इसलिये कहा गया है कि इस देह में बुद्धि, विचार, कल्पना, भावना, पुरूषार्थ सब क्षणभंगुर है। चिरकाल तक साथ रहने वाले इन तत्वों को मनुष्य को अपने परिश्रम से अर्जित करना पड़ता है। हम जीवन में बहुत कुछ जानते समझते हैं, सच–झूठ, न्याय–अन्याय आदि । यही सब हमारे जीवन को प्रभावित करते है पर हम स्वीकारते वहीं है जो हमें ठीक लगे। इस हेतु हमें अपने जीवन मूल्यों, को अपने व्यक्तित्व में शामिल करने का प्रयास निरंतर जारी रखना चाहिए।

जीवन की इस अल्पावधि में सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव है युवावस्था, जहाँ मनुष्य अपने जीवन मूल्यों गौरवशाली परंपराओं, संस्कारों और सांस्कृतिक आयामों को अपने व्यक्तित्व में लाकर समाज, देश व राष्ट्र का नाम उज्जवल करता है। अपने पुरूषार्थ, लगन और भाव–विहलता से समाज को नई दृष्टि प्रदान करता हैं नए प्रतिमानों को गढ़कर कीर्ति प्राप्त करता है। बदलते वैश्विक परिदृश्य में जहाँ हर वस्तु–विचार, भौतिकता की सीढ़ी चढ़ चुका है, वहाँ आज जीवन मूल्यों के संरक्षण की समाज में आवश्यकता महसूस की जा रही है। हिंसा, बलात्कार, चोरी और अवसाद की स्थितियों ने युवा मन पर आघात कर मन की कोमलता और सह्रदयता को समाप्त प्राय कर दिया हैं। ऐसी स्थितियों के प्रति बढ़ते युवा कदमों को जीवन मूल्यों के द्वारा ही रोका जा सकता है। जहाँ प्रेम–स्नेह, उत्साह–उमंग, मेहनत–विश्वास, सफलता व संस्कृति के अनुरूप समाज की गरिमा को बनाये रखकर मानव की जययात्रा में शामिल हो सके।

वर्तमान शिक्षा में समाजिक घटनाएँ एवं मूल्य–परक शिक्षा का अभाव जैसे विचारणीय प्रश्न शामिल हो गए। चुंकि वैश्विकरण और उदारीकरण एवं निजीकरण ने समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक परिस्थितियों को

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 118-121

बदल दिया है। इसलिये वर्तमान शिक्षा में चलाये जाने वाले विषय एवं योजनाऐं पर्याप्त जान पड़ते है। आज आवश्यकता है वर्तमान शिक्षा में जीवन मूल्यों को समझने व समझाने की। व्यक्तित्व विकास में जीवन मूल्य ही सकारात्मक सोच की ओर अग्रसर करते हैं, यही हमारी इच्छाओं की तृप्ति भी करते है। इसलिए जीवन मूल्य और शिक्षा का अंतर संबंध है। बदलते परिवेश व परिस्थितियों में समाज ने वैश्विक स्तर पर नए प्रतिमान खड़े किये है, जिन्हें युवा पीढ़ी को बड़ी आत्मीयता से सहेजना होगा। अपनी संस्कृति, सभ्यता और जीवन मूल्यों को सहेजना उनकी प्राथमिक जिम्मेदारी बनती है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली के तहत दी जाने वाली शिक्षा एक जिम्मेदार नागरिक तैयार करती है, जिसके कंधो पर समाज और देश की जिम्मेदारी होती है। इस हेतु वर्तमान में सकारात्मक और संरचनात्मक बदलाव के लिए जीवन मूल्यों को सहेजना अनिवार्य होता जा रहा है।

इस संदर्भ में श्रीमद् भगवद् गीता, रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथो की व्याख्या करना व उनके माध्यम से युवा पीढ़ी में जीवन मूल्यों को डालना हमारी नैतिक जिम्मेदारी बन गया है। श्रीमद्भगवद् गीता भारतीय आध्यात्म, दर्शन, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र आदि सभी दृष्टि से उत्कृष्ट एवं सार्वभौमिक ग्रन्थ रत्न है। धार्मिक क्षेत्र का यह सर्वमान्य धर्मग्रन्थ हैं। आज के इस अत्यंत संकीर्ण स्वार्थपूर्ण जगत में दूसरे के सुख–दुख को अपना सुख–दुख समझने की शिक्षा देने के साथ–साथ कर्तव्य और कर्मपथ पर आरूढ़ करने वाला, सत चरित्र की शिक्षा देने वाला एक मात्र ग्रंथ श्रीमद् भगवद् गीता ही है। विद्यार्थियों को धार्मिक, दार्शनिक तत्वों के आधार पर रामायण, महाभारत जैसे ग्रंथों के पात्रों के माध्यम से दी जाने वाली मानवीय मूल्यों व उनके द्वारा दिये जाने वाले प्रबंधन सिद्धांतों को समर्पण, नैतिकता, उच्च भावना, नेतृत्व क्षमता व सामाजिक कल्याण जैसी भावनाओं को डाला जा सकता है। ये ऐसे दिव्य महाकाव्य है, जिसमें मानव–जीवन के विभिन्न आयामों के आदर्श मिलते हैं और ये आदर्श मानव को महामानव बनाने में सक्षम है। आज मूल्य परक शिक्षा की आवश्यकता के चलते उच्च शिक्षा में इन्हें संदर्भ सहित उदाहरणों एवं दृष्टांतो द्वारा समझाया जा रहा है। व्यवसाय प्रबंध में तो इन पवित्र ग्रंथों को गुरू मानकर नए परिप्रेक्ष्य में व्याख्या कर उद्घाटित किया गया है।

जीवन मूल्यों के रोपण हेतु वर्तमान शिक्षा चाहे वह विद्यालयीन शिक्षा हो या उच्च शिक्षा में इंजीनियरिंग मेडिकल, प्रबंधन या प्रोफेशनल कोई भी क्षेत्र हो अपने समाज व संस्कृति के अनुरूप मनुष्य मात्र के प्रति अपने दायित्वों को सिखाना होगा, जिसमें श्रीमद् भगवद् गीता जीवन मूल्यों को सहेजने में सार्थक सिद्ध होगी। भगवद् गीता को हम मानवीय संबंधों, दृष्टिकोणों, दर्शन, ज्ञान और उपदेश का सर्वोत्कृष्ट और सर्वकालिक ग्रंथ मानते है, इसमें 26 मानवीय जीवन मूल्यों की विवेचना की गई है। इसमें निर्भिकता, मन की पवित्रता, योग–ज्ञान में परिपक्वता, देने की अभिलाषा, शांतिप्रियता, छल–कपटरहित व्यवहार, सभी के प्रति क्षमा का भाव, निस्पृहता का भाव, सभ्यता, विनम्रता, ऊर्जावान, क्षमाशील व्यक्तित्व, दृढ़ता, शुद्धता, घृणारहित–गर्वरहित स्वभाव तथा चुनौतियों का सामना करने की शक्ति जैसे गुणों को मूल्यों के रूप में निरूपित किया गया है, जिन्हें वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सम्मिलित किया जाना आवश्यक है, जिससे समाज के नैतिक स्तर को संवारने में सहयोग मिल सके।

मनुष्य जीवन भर अनेक अपेक्षाओं के सागर में गोते लगाता रहता है, जिसमें उसे कई संकटों से भी जूझना पड़ता है। इन संकटों के समाधान के लिए वह स्वयं को परमात्मा से जोड़ता है। श्रीमद् भगवद् गीता में कहा गया है – माता–पिता परमात्मा के अंश के रूप में हमें प्राप्त हुए है जिनकी श्रेष्ठता हमारे भीतर है। हमें इस विचार को श्रेष्ठता के साथ अपने भीतर उतारना होगा, क्योंकि यही हमारी आंतरिक ऊर्जा का प्रबंध करेगा।

कभी सोने की चिड़िया कहे जाने वाला भारत विश्व गुरू कहलाता था। आज अज्ञानियों, अधर्मियों और मूढों की तरह आचरण कर असत्य, अधर्म और आत्मघाती की तरह व्यवहार कर रहा है। ऐसी विषम परिस्थितियों से निकालने के लिए वर्तमान शिक्षा में तुलसी की रामचरितमानस और गीता के उपदेशों को आधार बनाकर समाज को शिक्षित करना होगा। क्योंकि अनेक महापुरूषों ने अपनी कृतियों को किसी धर्म–पन्थ, मत और संप्रदाय से न जोड़कर मानव–मात्र के कल्याण से जोड़ा, जिसका लाभ वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी लिया जा सकता है। गीता एवं रामायण में भी कहा गया है कि जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियाँ हमारे लिए वरदान साबित होती है। उदाहरण

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 118-121

के लिए राम का चौदह वर्ष का वनवास, राम का धैर्य, शौर्य और वीरता का परिचायक है । महाभारत पर नजर डालें तो अर्जुन और दुर्योधन इसके उदाहरण कहे जा सकते हैं। अर्जुन के समक्ष प्रतिपल प्रतिकूल परिस्थितियाँ रहीं जिन्हें चुनौती के रूप में ग्रहण कर सफलता अर्जित की। नियमित अभ्यास, दृढ़–इच्छा शक्ति, अथक परिश्रम व चुनौती को स्वीकार करने का अद्म्य साहस हमारे सशक्त व्यक्तित्व के विकास में सहायक होते हैं। गीता पांच हजार वर्ष पहले जितनी थी उतनी आज भी है। आधुनिक युग की दौड़ में एक मात्र गीता ही है जो हमें शांति का पाठ पढ़ाते हुए कर्म की ओर अग्रसर कर रही है। मनुष्य के भौतिक और आध्यात्मिक जीवन में तालमेल बैठाकर जीवन को सच्चे अर्थ में जीना सिखाती है।

''योगस्य कर्मेशु कौशलम्'' अर्थात् कुशलता द्वारा किया गया कर्म ही योग है। किसी भी कार्य को चित्त के आधार पर करना और उसमें कुशलता लाना ही योग है और यही गीता का ज्ञान है। गीता उपदेशित करती है 'कर्म करो फल की कामना मत करो' अर्थात् कर्मफल पर दृष्टि केन्द्रित कर मनुष्य को कार्य के प्रति सजग बनने का मार्ग दिखाती है। आज की युवा पीढ़ी को गीता द्वारा दिए गए संदेशों का गहनता पूर्वक अध्ययन् कर श्रीकृष्ण द्वारा दिए गए उपदेशों को जीवन दर्शन में स्थान देना होगा। भारतीय मनीषियों द्वारा दी जाने वाली शिक्षा का इतिहास देखा जाए तो उच्च शिक्षा देने वाले भारतीय गुरूकुलों की महत्वपूर्ण विशेषता यह रही कि गुरूकुलों में उच्चशिक्षा स्वच्छता, शील, व्यक्तित्व–विकास, इतिहास, शस्त्र ज्ञान आदि के माध्यम से शिक्षा दी गई है। जिनमें हमारे प्राचीन ग्रंथों वेद, पुराण, गीता, रामायण, महाभारत के प्रसंगाो को सुनाकर आचारण को शुद्ध किया जाता रहा है। श्रीमद् भगवद गीता में निष्काम कर्म और निष्काम भाव को महत्व दिया गया। यदि समाज के प्रत्येक नागरिक इस भाव को रखते हुए अपने कार्यक्षेत्र में अपना योगदान दे तो शायद समाज में बड़ा बदलाव लाया जा सकता है, किन्तु इसके लिए विद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर पर हमें ऐसी नैतिक शिक्षा देने की आवश्यकता है जो एक अच्छा नागरिक ही नहीं, बल्कि एक अच्छे मानव को भी निर्मित कर सके। काम, क्रोध, मद, लोभ जैसे मानसिक विकारों का नाश केवल सद्संगति द्वारा ही किया जा सकता है। इसलिए पाठ्यक्रम में ऐसे श्रीमद् भगवद् गीता, रामायण, महाभारत आदि के प्रसंगों, दृष्टांतों के आधार पर शिक्षा को नैतिकता की पृष्ठभूमि पर ले जाया जा सकता है।

श्रीमद् भगवद् गीता में कहा गया है कि मनुष्य अपना ही मित्र है और अपना ही शत्रु। ईश्वर ने हमें बुद्धि, विवेक से नवाज़ा है, जिसका प्रयोग कर इस ज्ञान को हमें अपने आचरण में उतारना होगा। गीता सिर्फ एक ग्रंथ नहीं जो जीवन–मृत्यु के दुर्लभ सत्य को अपने में समेटे हुए है, बल्कि एक सच्चे मित्र व गुरू की तरह उपदेश भी देती है। यह केवल किसी मनुष्य विशेष के लिए नहीं बल्कि पूरे जगत के लिए है। इसमें अध्यात्म एवं धर्म के बीच मोक्ष और सिद्धी को प्राप्त करने का उपदेश है। गीता में उपदेशित वाक्य और उससे प्राप्त शिक्षा को यहाँ विश्लेषित कर बिंदुवार प्रस्तुत किया गया ।

1. कर्म की प्रधानता या निष्काम कर्म की भावना
2. सभी के प्रति क्षमा भाव – सह्रदय और स्नेह की प्रतिमूर्ति भगवान श्रीकृष्ण के क्षमाशील होने का भाव में दिया।
3. स्वयं पर नियंत्रण – भीष्म पितामह के व्यक्तित्व में सह्रयता, सरलता के साथ स्वयं पर नियंत्रण करने की क्षमता को देखा गया।
4. देने की प्रवृत्ति – दानवीर कर्ण, महाभारत के ऐसे पात्र हैं, जिन्होंने दूसरों की मदद कर समाज में दानवीर की उपाधि पाई।
5. क्षमाशील व्यक्तित्व – धर्मराज युधिष्ठिर द्वारा निरंतर परिवारजनों के प्रति क्षमा का भाव सदैव ह्रदय में रखा गया।
6. असत्य पर सत्य की विजय – परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी कठिन और विषम हो सदैव सत्य मार्ग का अनुसरण करना।

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 118-121

7. समाज, देश व राष्ट्र के प्रति आस्थावन – समाज की उन्नति हेतु प्रत्येक नागरिक को अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों के प्रति आस्थावन होना चाहिए। पांडवों को भी इसी की शिक्षा दी गई।
8. नेतृत्व क्षमता
9. अहंकार का त्याग
10. निर्बल को सहयोग देना
11. अन्याय का प्रतिकार
12. वसुधैव कुटुम्ब कम का भाव
13. आलस्य का त्याग
14. मोह का त्याग
15. कला से प्रेम आदि

निष्कर्ष :–

अतः कहा जा सकता है कि बदलते वैश्विक परिदृष्य ने वर्तमान शिक्षा की चुनौतियों को बढ़ा दिया है। जहाँ, शुद्ध सात्विक, सहज एवं नैतिक आध्यात्मिक शिक्षा समाज के उत्थान का कार्य करती थी। आज वहीं व्यवहारिक, यांत्रिकी शिक्षा ने मनुष्य को यंत्रवत बना दिया है। भावात्मक चेतना की निर्ममता, रोबोटिक मानव निर्मित कर रही है जिससे मनुष्य का व्यवहार भी यंत्र के समान होता जा रहा है। मानवीयता का ह्रास, समाज के पतन कारण बन रही है। ऐसे में शिक्षा का दायित्व बनता है कि वे ऐसे मानव की रचना करे जो समाज का उत्थान कर सके। सभ्यता, संस्कृति के नये प्रतिमान गढ़ सके। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रचीन मूल्य, जो वास्तव में वैज्ञानिक कहे जा सकते हैं का रोपण किया जाए। गीता, रामायण और महाभारत जैसे धार्मिक, दार्शनिक ग्रंथों के उदाहरणों एवं दृष्टांतों से छात्र जीवन को परिचित करवाना होगा। जिससे उनमें सह्रदयता, नैतिकता, दार्शनिकता एवं उच्च विचारों का समावेश हो सकें। उनका व्यक्तित्व अनुशासित, नेतृत्वकारी, उदार, स्नेही एवं राष्ट्रहित का महत्वाकांक्षी हो। श्रीमद् भगवद् गीता में उल्लेखित दार्शनिक, व्यवहारिक विचारधारा जो आज के समय में उतनी ही प्रासंगिक कही जा सकती है जितनी प्राचीन युग में थी। आज उसे संकल्पित करने एवं वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शामिल करने की आवश्यकता है। निश्चित तौर पर भगवद् गीता में व्याप्त विचारों की समाज को आवश्यकता है। वैश्वीकरण ने ज्ञान और तकनीकी के स्थानान्तरण से श्रम के महत्व को कम कर दिया है। निबंध भोग प्रणाली ने जीवन स्तर को उपर जरूर उठाया है, लेकिन चारित्रिक शुचिता को दर–किनार कर दिया है। उपभोक्ता वादी संस्कृति की चकाचौंध ने संवेदनहीन राष्ट्रवाद को पैदा किया है। आज का युवा रोजगार के प्रति सजग है लाखों का पैकेज चाहता है, परन्तु रिश्तों के महत्व को नकार रहा है वह संबंध–हीनता के दौर से गुजर रहा है ऐसे में व्यक्ति विशेष की यदि बात की जाए तो वह परिवार, समाज, राष्ट्र व देश सभी से कट रहा है। आज के युवा को स्वयं अपने आदर्श स्थापित करने होगें, स्वयं रास्ते बनने होगें। उनके समाने बहुस्तरीय चुनौतियाँ है जिनका समाधान केवल और केवल श्रीमद्भगवद् गीता के ज्ञान मे ं है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. श्रीमद्भगवद् गीता
2. द्विमासिक पत्रिका 'रचना' अंक 105 नवं. दिसं. 2013 एवं जन.फर. 2015
3. कल्याण अंक – जुलाई, अगस्त
4. नैतिक मूल्य और भाषा
5- अहा ! जिन्दगी दिस. एवं जन 2014